

विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति

गृह पत्रिका - वर्ष 2009

अंक - 13

जुलाई - सितम्बर 2009

हिन्दी दिवस विशेषांक

सम्पादकीय

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर अपने साथ लेकर आता है उत्साह का माहौल ! पक्षेविसमिति में दिनांक 7 सितम्बर 2009 से 22 सितम्बर 2009 तक मनाये गये हिन्दी पखवाड़े के दौरान राजभाषा नीति अनुपालन में इसी प्रकार का उत्साह नज़र आया । इस ताज़गी को हमें सम्पूर्ण वर्ष अपने कार्य में बनाये रखना है ।

भाषा सम्प्रेषण का प्रभावी माध्यम है । अपनी मातृभाषा से हमारा परिचय हमारे परिवार से होता है । फिर शिक्षा अर्जित करते समय जो भाषा शिक्षा का माध्यम होती है, उससे हम परिचित होते हैं, और जब हम अर्थार्जन करने लगते हैं, तब व्यापार अथवा कार्यालय की भाषा को अपनाता होता है ।

हमें केन्द्र सरकार की सेवा में रहते राजभाषा हिन्दी का सम्मान करना है । अपना हर संभव कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करना है । राजभाषा नीति अनुपालन से संबंधित सभी नियमों / आदेशों का पालन करते हुए हम अपने कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में प्रगतिशील रहना हमारा परम कर्तव्य है और हम सब इसे निभायेंगे ।

शुभकामनाओं सहित ।

(मनजीत सिंघ)
सदस्य सचिव

राजभाषा समाचार

- ❖ राजभाषा विभाग के अनुसंधान अधिकारी (कार्यान्वयन) द्वारा दिनांक 27 अगस्त 2009 को कार्यालय का निरीक्षण किया गया ।
- ❖ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई की दिनांक 19 अगस्त 2009 को आयोजित बैठक में श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव एवं श्रीमती तरुप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने भाग लिया ।
- ❖ कार्यालय में दिनांक 7 सितम्बर 2009 से 22 सितम्बर 2009 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया ।

- ❖ राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 87वीं बैठक दिनांक 20 अगस्त 2009 को श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।
- ❖ दिनांक 7 अगस्त 2009 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में "व्यावहारिक हिन्दी" विषय पर श्री लक्ष्मण गुप्ता, सेवा निवृत्त हिन्दी अधिकारी ने व्याख्यान दिया । कुल 22 कार्मिकों ने इस कार्यशाला का लाभ उठाया ।
- ❖ पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति की वर्ष 2008-09 की वार्षिक रिपोर्ट दिनांक 11 अगस्त 2009 को द्विभाषी रूप में जारी की गई ।

समाचार दर्पण

- ❖ श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव ने दिनांक 17 अगस्त 2009 को पक्षेविसमिति, मुंबई में सदस्य सचिव का कार्यभार ग्रहण किया । पक्षेविसमिति परिवार में आपका हार्दिक स्वागत !
- ❖ श्री ओम प्रकाश सिंघ, अधीक्षण अभियंता ने दिनांक 3 अगस्त 2009 को पक्षेविसमिति, मुंबई में अधीक्षण अभियंता का कार्यभार ग्रहण किया । पक्षेविसमिति परिवार में आपका हार्दिक स्वागत !

बिदाई

- ❖ श्री प्रवीणभाई पटेल, सदस्य सचिव का गुजरात विद्युत नियामक आयोग में सदस्य के रूप में चयन होने पर हार्दिक अभिनन्दन । दिनांक 5 अगस्त 2009 को पक्षेविसमिति से कार्यमुक्त होने पर भावभीनि बिदाई दी गई ।
- ❖ श्री सु.द. टाकसांडे, अधीक्षण अभियंता के क्षेत्रीय निरीक्षण कार्यालय, मुंबई में स्थानांतरण पर दि. 03 अगस्त 2009 को पक्षेविसमिति से कार्यमुक्त होने पर भावभीनि बिदाई दी गई ।

उच्च वोल्टता प्रणाली

ओ.प्र.सिंह,
अधीक्षण अभियंता

विद्युत ऊर्जा का रूप है, ऊर्जा के बारे में कहा जाता है कि ऊर्जा अक्षय है इसका सिर्फ रूप बदलता है परन्तु यह कभी भी नष्ट नहीं होती। ऊर्जा के स्रोत पारम्परिक एवं गैर पारम्परिक प्रकार के हैं। पारम्परिक ऊर्जा स्रोत कोयला, प्राकृतिक गैस, पेट्रोल, डीजल इत्यादि हैं। विश्व में इनके जो भंडार हैं वे एक न एक दिन इनका उपयोग करने पर समाप्त होने वाले हैं, गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों में पवन ऊर्जा, समुद्र में आने वाले ज्वार भाटा आदि आते हैं। जल से विद्युत बनाने में जल गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत है।

विभिन्न स्रोतों से ऊर्जा निहित है। परन्तु उनका उपयोग करने में ऊर्जा किस रूप में प्राप्त होगी यह प्रकृति के नियमानुसार है उदाहरण के तौर पर जब हम कोयला, डीजल, लकड़ी आदि का प्रयोग करते हैं तो उनमें से हमें गर्मी मिलती है, यह एक ऊर्जा का रूप है, पवन ऊर्जा के रूप में हमें गति मिलती है, चीजों को गर्म करके हम वाष्प बना सकते हैं इस भाप से इसके गुणों के कारण कोई इंजन चला सकते हैं, खाना बना सकते हैं, पवन ऊर्जा से गति प्राप्त है, जिससे पवन चक्की आदि चलाई जाती है। इस तरह हम देखते हैं कि विभिन्न स्रोतों से प्राप्त ऊर्जा को हम निर्धारित कार्य के लिए प्रयोग में ला पाते हैं।

परन्तु विद्युत ऊर्जा एक ऐसा ऊर्जा स्रोत है जिसमें हम कोई भी कार्य कर सकते हैं। आप देखते हैं कि विद्युत से बड़ी-बड़ी (मोटर) मशीनें चलती हैं, कहीं पर यह विद्युत प्रकाश प्रदान करने का काम करती है तो कहीं पर पंखा चलाकर इससे हवा मिलती है, गर्मी में वातानुकूलन यंत्र चलाकर ठंडक मिलती है। कहने का मतलब है कि विद्युत ऊर्जा से हम कोई भी काम जो सोचते हैं सहज ही किया जा सकता है। अतः विद्युत ऊर्जा का मानव जीवन, समाज की प्रगति आदि पर बड़ा योगदान है।

विद्युत उत्पादन, पारेषण और खपत इस विद्युत ऊर्जा के महत्वपूर्ण आयाम हैं। अतः भले ही संक्षेप में सही, विषय के साथ सहजता बनाने के लिए इन आयामों पर एक नजर डालना आवश्यक है।

विद्युत उत्पादन

विद्युत उत्पादन कहाँ और किस मूलभूत ऊर्जा स्रोत के माध्यम से किया जाये यह अपने आप में एक गूढ़ विषय है। संक्षेप में इतना कहा जा सकता है कि भौगोलिक स्थिति एवं मूलभूत ऊर्जा स्रोत की उपलब्धता के आधार पर उत्पादन गृह लगना है इसका निर्णय किया जाता है, मसलन जहाँ पर कोयला मिलता है उसके पास ही तापीय विद्युत उत्पादन किया जाता है, पहाड़ों में जहाँ बाँध बनाकर पानी रोका जा सकता है वहाँ जल विद्युत परियोजनाएँ लगायी जाती हैं और जहाँ पर वायु वेग अधिक है वहीं पर पवन चक्की लगाई जा सकती है। कहने का मतलब यह है कि विद्युत परियोजनाओं का स्थल, उपलब्ध ऊर्जा स्रोत के ऊपर निर्भर एवं एक प्रकार से तय है।

विद्युत की खपत

अब हम विद्युत पारेषण से पहले विद्युत खपत के स्थल पर संक्षेप में चर्चा कर लेते हैं। जैसा कि विदि है कि विद्युत की खपत वहीं होगी जहाँ कल कारखाने तथा आबादी है, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि विद्युत का उत्पादन सामान्य आबादी के रहने के स्थल से दूर

मूल ऊर्जा स्रोत की उपलब्धता पर निर्भर है। अतः यह बात समझती है कि विद्युत का उत्पादन कहीं और किया जाता है और खपत कहीं और होती है और उत्पादन एवं खपत के स्थल में काफी भौगोलिक दूरी रहती है। इस परिवेश में यह आवश्यक है कि विद्युत का पारेषण उत्पादन स्थल से खपत स्थल तक किया जाये।

विद्युत का पारेषण

विद्युत का उत्पादन 11 के.व्ही., 21 के.व्ही. के विभव (वोल्टेज) पर किया जाता है एवं आवश्यकता अनुसार विद्युत की खपत 220 वोल्ट, 415 वोल्ट, 11 के.व्ही. (11000 वोल्ट) पर सामान्यता होता है। अतः एक बात तो स्पष्ट है कि उत्पादन गृह से खपत स्थल तक विद्युत को उपरोक्त विभव पर लाया जा सकता है। विद्युत को उत्पादन स्थल से खपत स्थल तक लाने के लिए तारों का प्रयोग किया जाता है। यह एक वैज्ञानिक नियम है कि जब तारों में विद्युत का प्रवाह होता है तो नाभिकीय गुणों के कारण कुछ प्रतिरोध पैदा होता है। प्रतिरोध चालक का स्वभाविक गुण है। इस प्रक्रिया में स्थानान्तरित की जाने वाली विद्युत ऊर्जा का कुछ भाग क्षय होता है। वास्तव में ऊर्जा तो अक्षय है अतः यहाँ भी ऊर्जा क्षय नहीं होती अपितु ऊर्जा के ऐसे रूप में परिवर्तित हो जाती है जो अकारण ही व्यर्थ रहता है। यह सिर्फ तारों को गरम कर देती है, तारों के गरम होने से उनकी अवरोधक क्षमता और बढ़ती है जिससे की और ऊर्जा की खपत तारों को गरम करने में होने लगती है। जिन तारों में ऊर्जा का प्रवाह होता है उनमें ऊर्जा की खपत उनके अवरोधक गुण के कारण एक निश्चित नियमानुसार होती है। इसको निम्नानुसार समझा जा सकता है:

अगर तार की प्रतिरोधक क्षमता आर (R) है और उसमें आई (I) एम्पियर विद्युत धारा प्रवाहित हो रही है तो ऊर्जा के प्रवाह में (विद्युत धारा $I^2 \times$ प्रतिरोधक क्षमता $(I^2 R)$ की मात्रा उस तार को गरम करने में प्रयोग हो जाती है। इस प्रकार यदि 'अ' किलोवाट विद्युत उत्पादन स्थल से प्रेषित की गयी है तो खपत स्थल पर $[अ-(आई)^2 \times$ (आर)]---(i) ही पहुँचेगी।

अब इसको कम करने अर्थात् तारों में विद्युत खपत को कम करने के लिए क्या किया जाये? तो यहाँ पर भी, इस नियम के अन्तर्गत की अगर पारेषण वोल्टेज को बढ़ा दिया जाये तो प्रवाहित होने वाली धारा (Current) कम हो जाती है जबकि कुल विद्युत की मात्रा वही रहती है। अतः हम उपरोक्त (i) से देखेंगे कि अगर विद्युत धारा को 'आधा' कर दिया जाये तो तारों में ऊर्जा क्षय 'चौथाई' रह जाता है अगर इसे 'एक दशम' कर दिया जाये तो तारों में क्षय होने वाले ऊर्जा क्षय को $(1/10)^2$ से अर्थात् $(1/100)$ किया जा सकता है। बस इसी सिद्धांत के आधार पर पारेषण में ऊर्जा क्षय को कम करने के लिए उच्च वोल्टता वितरण प्रणाली बनाई गयी है।

आज देश में 765 के.वो. पर, 400 के.वो., 220 के.वो. 132 के.वो. पर विद्युत का पारेषण विद्युत गृहों से खपत स्थल पर किया जा रहा है। आगे वितरण के लिए 33 के.वो., 22 के.वो. एवं 11 के.वो. का उपयोग किया जा रहा है। कोशिश यह है कि सामान्य उपभोक्ता के निकट से निकट कम से कम 11 के.वो. पर विद्युत लाया जाये और खपत स्थल पर ट्रांसफार्मर के द्वारा उसे 440 वोल्ट में बदल कर उपभोक्ता को विद्युत दी जाये।

आज हमारे देश में 20 से 30 प्रतिशत तक विद्युत वितरण में खर्च हो जाती है। अगर हम इस खपत को कम करके 12-15 उच्च वोल्टता

वितरण प्रणाली द्वारा कर सकें तो हमें 7000 से 8000 मे.वा. अतिरिक्त विद्युत वितरण के लिए उपलब्ध हो जायेगी। इसी दिशा में सरकार काफी कार्य कर रही है और आशा है कि अगले चार-पाँच वर्षों में हम उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

कहते हैं कि बचाई गई विद्युत उत्पादित विद्युत के बराबर है तो क्यों न हम उच्च वोल्टता प्रणाली वितरण का उपयोग कर इसको अमली जामा पहनायें और 7000 में 8000 मे.वा. विद्युत उत्पादन के लिए लगने वाले करीब 30,000/- करोड़ रुपये को बचाएँ।

अतः हम कह सकते हैं कि उच्च वोल्टता वितरण प्रणाली आज की आवश्यकता है।

घरेलू विद्युत उपकरणों का सही उपयोग एवं रख-रखाव

-मोresh्वर धकाते,
कार्यपालक अभियंता

सभी घरों में विद्युत उपकरणों का उपयोग होता है। पहले तो केवल लाईट (बल्ब), ट्यूबलाईट, टी.वी. पंखे, फ्रीज, प्रेस यही उपकरण पाये जाते थे। लेकिन अभी देखें तो गीजर, टोस्टर, मायक्रोवेव, ए.सी., ऐसे और भी कई विद्युत उपकरण आसानी से उपयोग में लाते हुए पाये जाते हैं। ऐसा नहीं है कि पहले इनके बगैर काम होता नहीं था, पर इन उपकरणों के बाजार में सस्ते दाम में मिलने से और उपयोग करने की आसान तकनीक की वजह से ये उपकरण ज्यादा लोकप्रिय हो गये हैं। जब ये उपकरण नहीं थे तब भी कोयले, गैस आदि की मदद से भी विद्युत उपकरणों द्वारा किया जाने वाला काम तो होता ही था लेकिन थोड़ी मुश्किल जाती थी। विद्युत उपकरणों द्वारा जैसे कुछ खाना बनाने के लिए मायक्रोवेव में रखकर एवं तापमान और टाईमर लगाकर यह सुविधा रही है कि हमें वहां खड़ा रहने की जरूरत नहीं रही है। हम उपर्युक्त सेटिंग करके बाहर हॉल में बैठे टी.वी. भी देख सकते हैं। खाना बनने के बाद अलार्म द्वारा हमें अपने आप पता चल जाता है।

इन सभी सुविधाओं के बावजूद इनका उपयोग एवं रखरखाव सही ढंग से करना बहुत जरूरी है। ज्यादातर देखा गया है कि कोई भी उपकरण लाने के बाद उसे जल्द से जल्द चालू करके देखने की तमन्ना होती है। गृहिणियों एवं बच्चों के लिए यह बात खास तौर पर लागू होती है। घर के मुखिया को इस बात पर उचित ध्यान देना पड़ता है और जरूरी भी है। इन उपकरणों के उपयोग तथा रखरखाव की कुछ सामान्य तकनीक जो ज्यादातर उपकरणों के लिए लागू होती हैं, इस प्रकार है:

1) ट्यूबलाईट, बल्ब, सी.एफ.एल. आदि पर जमी हुई धूल / गंदगी नियमित तौर पर साफ करना बहुत जरूरी है। इससे रोशनी तो ज्यादा आएगी साथ ही साथ उपकरणों की लाईफ भी बढ़ेगी एवं आँखों पर विपरीत परिणाम भी नहीं होगा। बस यह ध्यान रखना है कि चालू स्थिति में किसी भी उपकरण को छूना खतरे से खाली नहीं है। इसलिए साफ-सफाई करते वक्त उपकरण बंद रखना चाहिए बल्ब, ट्यूबलाईट आदि को बंद करने के कुछ देर बाद ही हाथ लगाना चाहिए जब तक वह ठंडा नहीं हो जाए।

2) पंखे आदि साफ करते समय पंखे की ब्लेड पर कोई प्रेशर नहीं देना चाहिए अन्यथा ब्लेड टूटे हो जाते हैं और उचित हवा नहीं फेंकते। कुछ लोगों को नीचे खड़े-खड़े ही पंखे पर कुछ लंबा कपड़ा डालकर पौछते हुए देखा गया है। यह बहुत गलत बात है ऐसा

करने पर पंखे पर जमी धूल / गंदगी साफ हुई या नहीं हुई, यह पता नहीं चलता क्योंकि ज्यादातर धूल पंखे के ऊपरी भाग में होती है। इसलिए स्टूल या चेयर की मदद से ही उस पर खड़े होकर साफ सफाई करनी चाहिए।

3) ज्यादातर विद्युत उपकरण विद्युत कनेक्शन के लिए प्लग में दिए गए स्कू या लूज कनेक्शन की वजह से बराबर काम नहीं करते। इसीलिए नियमित तौर पर इलेक्ट्रिशियन द्वारा घर में उपलब्ध सारे प्लग प्वाइंट एवं कनेक्शन चेक करने चाहिए।

4) मायक्रोवेव जैसे कठिन उपकरण खासकर जो ग्रिल एवं कनेक्शन के साथ आते हैं, इनका उपयोग मैनुअल देखकर ही करना चाहिए। मायक्रोवेव पर खाना पकाते समय लोहा / स्टील या एल्युमीनियम फाइल का उपयोग नहीं करना चाहिए अन्यथा सारी बिजली इन चीजों को गरम करने में लग जायेगी और खाना ही नहीं पकेगा। गलत तरीके से उपयोग करने पर मायक्रोवेव को भी नुकसान हो सकता है। मायक्रोवेव में पूरी तरह बंद वस्तु जैसे अंडा, नारियल बिना पानी के नहीं गरम करनी चाहिए अन्यथा यह फट सकते हैं। मायक्रोवेव को केवल पानी गरम करने के लिए भी उपयोग नहीं करना चाहिए। पानी से उबलने और जलने के कई उदाहरण हमने सुने एवं देखे होंगे।

5) इस्त्री का उपयोग करते समय सबसे पहले इसे साफ कपड़े से पोंछ लेना चाहिए ताकि कपड़ों में दाग न लगे। कपड़ा किस प्रकार का है यह देखकर एवं उचित सेटिंग (तापमान की) करकर ही इस्त्री करना चाहिए। इस्त्री सही एवं जल्द ढंग से करने के लिए कुछ उत्पाद जैसे इस्त्री टेबल बाजार में मिलते हैं। इसका उपयोग करके हम इस्त्री को कपड़े के केवल एक ही बाजू में घूमाकर अच्छी इस्त्री कर सकते हैं। बाजार में अभी हल्की एवं भारी दोनों प्रकार की इस्त्री मिलती है। घरों में इस्त्री करते वक्त खासकर जब ज्यादा कपड़े इस्त्री करना हो तब भारी इस्त्री का उपयोग करना उचित है। बाहर जाते समय हल्की एवं छोटी इस्त्री का उपयोग करना उचित है। हमने देखा होगा कि सभी इस्त्री करने वाली दुकानों में हल्की इस्त्री प्रयोग में नहीं लाई जाती है क्योंकि ज्यादा कपड़ों के लिए भारी एवं बड़ी इस्त्री ही अच्छी है।

6) गीजर का उपयोग करने के लिए पानी की धार सही होनी चाहिए। कुछ लोग पानी की धार एकदम बारीक रखकर गरम पानी बकेट में भरते हैं और बाद में पानी जरूरत से ज्यादा गरम हुआ इसलिए उसमें ठंडा पानी डालते हैं। यह बहुत गलत है। आपको कितना तापमान चाहिए उसी हिसाब से पानी नियंत्रित कर पानी की धार ज्यादा से ज्यादा रखनी चाहिए। हम लगभग 40 अंश से. गरम पानी से नहाना पसंद करते हैं। अगर पानी की धार कम रखकर पानी को ज्यादा गरम कर दिया जाए तो यह एक अपव्यय होगा। 100 अंश से. का पानी 90 अंश से. तक ठंडा होने में अगर 5 मिनट का समय लगता है तब 50 अंश से. का पानी 40 अंश से. तक ठंडा होने में करीब 10 मिनट का समय लगता है। इसलिए पानी ज्यादा गरम होने पर बिजली का अपव्यय होता है और बिजली के उपकरण जैसे गीजर को नुकसान हो सकता है। साथ ही अगर कोई अनजाने में बकेट के पानी में हाथ डालता है तब हाथ जलने की पूरी संभावना होती है।

गीजर या वाटर हीटर भी बाजार में मुख्यतः दो प्रकार के उपलब्ध हैं। इमें इन्स्टैंट वाटर हीटर जो कि जल्दी पानी गरम करते हैं, ज्यादा वाट के होते हैं, घरों आदि में उपयोग में आते हैं। दूसरे

प्रकार में स्टोरेज वाटर हीटर जो कि ज्यादातर होटल आदि में जहाँ गरम पानी की बहुत अधिक आवश्यकता होती है उपयोग में लाये जाते हैं ।

7) कम्प्यूटर आदि उपकरणों जैसे टी.वी., फ्रीज या अन्य महंगे उपकरणों को वोल्टता स्टेबिलाइज़र, यू.पी.एस. स्पाईक गार्ड में लगाकर ही उपयोग में लाना चाहिए । इससे उपकरणों में गड़बड़ी होने की सम्भावना कम होती है । अभी तो यह उपकरण जैसे यू.पी.एस., स्पाईक गार्ड बहुत सस्ते हो गये हैं । इनका उपयोग आराम से किया जा सकता है ।

उपरोक्त सारी बातें अलग-अलग उपकरणों के लिए अलग-अलग तरीके से लागू होती हैं । ये सारे उपकरण उनके मैनुअल में दिए गए निर्देशानुसार उपयोग में लाना चाहिए ।

कुछ सामान्य बातें जो कि सभी उपकरणों के लिए लागू होती हैं इस प्रकार हैं:

1. सभी उपकरण 2-पिन की जगह 3-पिन वाले प्लग में उपयोग करने चाहिए । अर्थिंग न हो तो अलग से पिन बदलकर और वायर बदलकर लगाये जा सकते हैं ।
2. बड़े उपकरण जैसे गीजर, टी.वी. प्रेस, रेफ्रिजरेटर वाशिंग मशीन आदि 15 एम्पियर प्लग साकेट में लगाने चाहिए । अन्य छोटे उपकरण जैसे मिक्सर, चार्जर (मोबाइल), डी.वी.डी. प्लेयर आदि 5 एम्पियर प्लग साकेट में लगाने चाहिए ।
3. सभी उपकरणों के लिए स्पाईक गार्ड जो कि बहुत सस्ते हैं उपयोग में लाये जा सकते हैं । उनके उपयोग से तीन वायरों (फेज़, न्यूट्रल, अर्थिंग) में किसी भी वायर में गड़बड़ी होने पर फॉल्ट पता चलता है और उपकरण खराब होने से बच जाता है । साथ ही इनके उपयोग से एक्सटेंशन बोर्ड का भी काम हो जाता है ।
4. कोई भी नया उपकरण लाने के बाद पहले उनके उपयोग के लिए दिये गये निर्देश पढ़ने चाहिए और बाद में उन्हें उपयोग में लाना चाहिए ।
5. रिचार्जबल उपकरण जैसे मोबाइल, टॉर्च आदि की बैटरियाँ नियमित रूप से और उचित समय तक उचित चार्जर से ही चार्ज करनी चाहिए । इससे इनकी आयु बढ़ जाती है । मोबाइल चार्ज होते वक्त उसे उपयोग में नहीं लाना चाहिए । इससे वह फट सकता है ।

उपरोक्त सभी बातें ध्यान में रखते हुए अगर विद्युत उपकरणों को उपयोग में लाया जाये तो ये सुरक्षित, अच्छे और सक्षम तरीके से चलेंगे और इनका आयुष्मान भी बढ़ेगा, साथ ही बिजली का बिल भी कम होगा ।

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस 2009 की रिपोर्ट

पक्षेविसमिति, मुंबई में दिनांक 07 सितम्बर 2009 से 22 सितम्बर 2009 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया । कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने की दृष्टि से हिन्दी पखवाड़े के दौरान कुल 12 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थीं । हिन्दी पखवाड़े के उपलक्ष्य में कार्यालय में आयोजित की गयी विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं की रूपरेखा इस प्रकार तैयार की गयी थी कि इनमें सभी श्रेणी के अधिकारी / कर्मचारी जैसे कि तकनीकी, प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी तथा चतुर्थ श्रेणी तक के कर्मचारी भी भाग ले सकें और हिन्दी में सोचना, लिखना, कला प्रस्तुत करना आदि गुणों को प्रोत्साहन मिले ।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान निम्नानुसार प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं:

1. हिन्दी निबंध (क, ख वर्ग)
2. हिन्दी निबंध (ग वर्ग)
3. कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण
4. हिन्दी निबंध (क, ख एवं ग वर्ग सभी के लिए एक विषय)
5. भाषण (क, ख वर्ग)
6. भाषण (ग वर्ग)
7. हिन्दी श्रुतलेख (अहिन्दी भाषियों के लिए)
8. हिन्दी दिवस समारोह अंताक्षरी / प्रश्न मंच
9. हिन्दी वाचन (अहिन्दी भाषियों के लिए)
10. हिन्दी टिप्पण आलेखन
11. हिन्दी वाचन - लेखन (तत्कालीन चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी)
12. घोष वाक्य / स्लोगन

दिनांक 14 सितम्बर 2009 को कार्यालय में हिन्दी दिवस मनाया गया । इस अवसर पर अंताक्षरी / प्रश्न मंच का आयोजन किया गया । इस अवसर पर श्री प्रवीणभाई पटेल, सदस्य, गुजरात विद्युत नियामक आयोग विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे । अंताक्षरी / प्रश्न मंच प्रतियोगिता के प्रथम स्थान के विजेता समूह को उन्होंने अपनी ओर से विशेष पुरस्कार प्रायोजित किया ।

हिन्दी पखवाड़ा 2009 के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में कार्यालय के कुल 36 अधिकारी / कर्मचारियों में से 28 कार्मिकों ने भाग लिया । इनमें से अधिकतर अधिकारियों / कर्मचारियों ने एक से अधिक प्रतियोगिता में भाग लिया । इस प्रकार 12 प्रतियोगिताओं में कुल 135 प्रतियोगियों ने भाग लिया । अन्य अधिकारियों ने कुछ प्रतियोगिताओं में निर्णायक का कार्य किया । हिन्दी दिवस समारोह एवं समापन समारोह में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी अधिकाधिक अधिकारियों / कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । इस प्रकार हिन्दी पखवाड़े के आयोजन में सम्पूर्ण कार्यालय का सहभाग रहा ।

हिन्दी पखवाड़े का पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह दिनांक 30 सितम्बर 2009 को कार्यालय के सेमिनार हॉल में आयोजित किया गया । इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों ने गीत, कविताएँ, चुटकुले आदि प्रस्तुत किए । तत्पश्चात श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव के कर कमलों से विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किये गए । इस पुरस्कार वितरण समारोह में हिन्दी प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों के साथ ही वर्ष 2008-09 के दौरान कार्यालय में लागू 5 प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को भी पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए । राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान विद्युत मंत्रालय द्वारा कार्यालय में दिनांक 13.10.2008 से 17.10.2008 तक आयोजित (राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रायोजित) हिन्दी कम्प्यूटर प्रशिक्षण के प्रमाण पत्र भी इस समारोह में वितरित किए गए । तत्पश्चात सदस्य सचिव महोदय ने अपने संबोधन में सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और कहा कि हिन्दी पखवाड़े के कार्यक्रमों से प्रेरणा लेकर संपूर्ण वर्ष में सभी अधिकारी / कर्मचारी अपने हिन्दी कार्य को बढ़ावा दें । कार्यक्रम का मंच संचालन सुश्री तरुप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने सुरुचिपूर्ण ढंग से किया । श्री एम.एम.घकाते, राजभाषा अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।
